श्रीराधाचरित महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय

डॉ॰ दिनेश कुमार शर्मा [संस्कृत विभाग]
एस.आर.पी.ए.ए.बी.कॉलेज,पठानकोट [पंजाब]

संक्षिप्त परिचय –

संस्कृत साहित्य रूपी विशाल समुद्र में महाकवियों द्वारा रचित अनेकों ऐसे देदीप्यमान काव्य-महाकाव्य रूपी रत्न हैं ,जो स्वयं तो प्रकाश पुंज हुये ही हैं साथ ही अन्य सहृदय मननशीलपाठकों के मार्ग दर्शक भी रहे हैं,जिन्हों ने अपने जीवन को सुखमय तथा सफल बना दिया है ।उन्हीं प्रकाश पुंज,मणिरूप महाकाव्यों में से एक रत्न श्रीराधाचरित महाकाव्य है ,जिसे विद्वद्समाज में पूज्यमहाकवि आचार्य श्री कालिका प्रसाद शुक्ल ने अपनी अनुपम मनन,कवित्व शक्ति से तथा कुशाग्र बुद्धि के कौशल से अलंकृत किया है ।यह महाकाव्य 20 वीं शताब्दी का आधुनिक महाकाव्य है ।त्रयोदश सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य के नाम से ही ज्ञात हो जाता है कि इस में श्रीराधा का जीवन चरित्र चित्रित किया गया है । यद्यपि इस महाकाव्य के यथोचित अध्ययन करने पर इस महाकाव्य के नायक श्री कृष्ण प्रतीत होते हैं तथापि महाकवि के द्वारा इनका चरित्र अंग रूप में ही स्थापित किया गया है ।श्री राधा ही इस महाकाव्य की मुख्या पात्रा हैं ।इसका उद्धरण हमें प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक में ही प्राप्त हो जाता है जो महाकवि ने बालक्रीड़ा के व्याज से मंगलाचरण के रूप में श्री राधा के प्रति अपनी अनन्य भक्ति दर्शाते हुये यह अधोलिखित पद्य उद्धृत किया है –

कदाचिद् रज्यन्तीं पदमनुपमालक्तकरसैः,
कदाचिद्गुम्फ़न्तीमतीमसृण केशेषुकुसुमम्।
कदाचिच्चोज्झन्तीं पठनमिषकान्ताङ्कवसतिम्,
सदा वामां राधा' परिकलयति स्वान्तमनिशम्॥[1]

अर्थात् श्रीराधा बाल्यावस्था में अवर्णनीय आलक्तक रस से अपने चरणों को रक्त वर्ण से युक्त करती हैं ।कभी अपने सुंदर केशों पर पुष्प गूँथती हैं , कभी पठन व्याज से अपने प्रिय श्री कृष्ण के उत्संग का परित्याग कर किसी दूसरे स्थान को जातीं हैं ।अतः कमनीया उस श्रीराधा को मेरा यह अन्तःकरण अपने मध्य निरंतर चिंतन करता है ।

महाकवि द्वारा यत्किंचिदपि इस महाकाव्य में वर्णित है , वह क्रमशः सर्गानुसार निम्नलिखित प्रकार से है –

प्रथम सर्ग –

प्रथम सर्ग के प्रथम श्लोक से लेकर पद्य संख्या 43 तक श्रीराधा की स्तुति का वर्णन किया गया है ।जैसे इस सर्ग के इन पद्यों में से गृहीत यह निम्न पद्य –

देहप्रभाविजितचम्पककम्रताकां,
दीव्यन्मरीचिमुखमार्जितशारदाब्जाम् ।
नेत्राभिपीतनलिनीकमनीयकातां ,
कृष्णप्रियां भवहराय नमामि राधाम् ॥[2]

[1]श्रीराधाचरित महाकाव्य 1/1

अर्थात् जिसने शरीर की कान्ति से चंपक पुष्प की कान्ति को जीत लिया है,ऐसी देदीप्यमान मुख की कान्ति से शरदचंद्र को भी जीतने वाली तथा नेत्रों से नलिनी के सौन्दर्य को भी तिरस्कृत कर देने वाली , श्रीकृष्ण की प्रिया श्रीराधा को इन सांसारिक जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति के लिए नमस्कार करता हूँ ।

श्रीराधा की स्तुति के पश्चात्श्लोक संख्या 44-53 तक श्रीराधा के राधा नामक सरोवर का वर्णन है जिस के किनारे पर भांति-भांति के वृक्ष उस सरोवर का अभिनंदन कराते हैं । जैसे-

जम्बूरसालककुभा गिरिमल्लिकाद्याः,
पुष्पप्रवालबलिभिः पुलिने विरूढाः।
संलब्धजीवनमहो ही सरोऽभ्यनन्दन्,
प्रायो जडा अपि कृतज्ञधियो भवन्ति ॥[3]

अर्थात् तट पर विरूढ जामुन ,आम,अर्जुन,कुटजादि वृक्ष अपने पुष्पों तथा नयी-नयी कोपलों द्वारा उपहार रूप से सरोवर का अभिनंदन करते हैं , क्योंकि उनका जीवन उस सरोवर के जल पर ही निर्भर है ।किसी नें सत्य ही कहा है कि जड़ पदार्थ भी प्रायः कृतज्ञ होते हैं ।

पद्य संख्या 54-74 तक वृन्दावन के वर्णन में , मध्य के पद्यों में कहीं कहीं पक्षियों , व्रज ललनाओं तथा पशुओं का वर्णन है तथा सर्ग के अंतिम दो पद्यों , संख्या -74 में श्रीराधा के रोमांचों को देखकर सखियों द्वारा सांत्वना देना एवं श्लोक संख्या -76 में महाकवि नें अपना परिचय देते हुये सर्ग का अंत किया है । यह प्रक्रिया प्रत्येक सर्ग के अंतिम पद्य में दृष्टिगोचर होती है ।

द्वितीय सर्ग -

द्वितीय सर्ग के श्लोक संख्या 1-44 तक वरसानु नागरी का वर्णन किया गया है । जो नगरी देवेन्द्र के भवनों को भी तिरस्कृत करती है , जहां के शुक भी शिक्षित हैं । हाथी तथा अश्व विशाल काय हैं । दूध देने वाली श्वेत गायें हैं ।जैसे एक उदाहरण दर्शनीय है -

प्रतिगोकुलमर्जुनार्जुनीसमजः शम्भुनगस्य मानसम् ।
क्षरता पयसा महीतले भृशमुद्वेलयतीव शाश्वतम् ॥[4]

अर्थात् गोकुल में श्वेत गायों नें भूमि पर प्रसरितदूध से मानों हिमालय के मन को झकझोड़ दिया । अर्थात् वहाँ अधिक दूध देने वाली गायें थीं ।

तत्पश्चात् श्लोक संख्या 45-71 तक यमुना का वर्णन है । जैसे -यमुना के श्यामत्व की उत्प्रेक्षा निम्न प्रकार से वर्णित है -

वसनच्छलतो व्रजाङ्गनावरणं नीपतरौ मुरारिणा ।
अवलंबितमेव भासते प्रतिबिम्बात्मतया तवाम्बुनि ॥[5]

अर्थात् हे भानुजे ! भगवान्श्रीकृष्ण ने कदम्ब वृक्ष पर ठहरने के व्याज से व्रज बालाओं के वस्त्रों को वहाँ रखा दिया था । उन्हीं वस्त्रों का प्रतिबिंब तुम्हारे जल में पड़ने से सुशोभित हो रहा है । अर्थात् उन वस्त्रों के प्रतिबिंब के कारण ही तुम्हारा जल नील वर्ण का है ।

---

[2]श्रीराधाचरित महाकाव्य 1/34
[3]श्रीराधाचरित महाकाव्य 1/45
[4]श्रीराधाचरित महाकाव्य 2/40
[5]श्रीराधाचरित महाकाव्य 2/65

इस प्रकार सर्ग के अंतिम पद्यों में क्रमशः 72,73,74तथा 75 में श्रीराधा की धरा की विजयता , वृंदा वन धाम की स्तुति तथा कवि के अपने परिचय से सर्ग की समाप्ति हुयी है ।

तृतीय सर्ग –

इस सर्ग के एक से आठ पद्यों तक देववाणी वर्णित है,9-19 पद्यों तक श्री वृषभानु द्वारा श्रीराधा रूप तेज का व्याख्यान किया गया है । 20-31 पद्यों तक श्री वृषभानु द्वारा स्वप्न में दृष्ट कमल का वर्णन प्रस्तुत किया गया है ।जैसे इसका एक उदाहरण इस प्रकार है-

सुकृतमूर्तिरिदं चरमे निशो जगदमङ्गलनाशविधायकम् ।
भुवनभासुरकीर्तिसमुज्ज्वलः शयन ऐक्षत भव्यमुखप्रभः॥[6]

अर्थात् सकल भुवन में जिसका यश भासित है ,ऐसे साक्षात् धर्म मूर्ति , प्रसन्न मुख वाले श्री वृषभानु ने जगत् के अमंगल के नाशक इस कमल को स्वप्न में देखा ।

32-54संख्या तक के पद्यों में श्री वृषभानु द्वारा निद्रात्याग के साथ-साथ प्रातः का वर्णन है तथा तालाब में स्नानादि कार्य की समाप्ति के बाद श्रीराधा की प्राप्ति का वर्णन 55-74 पद्यों तक वर्णित है । जैसे इन में से एक पद्य इस प्रकार प्रस्तुत है: –

पथि तदा मरुतां सुमनोभरैः स्तुतिवचस्ततिभिश्च विवर्द्धितः ।
पुरजनानतिभिः स समादृतो मुदमविन्दत युक्तसुदुर्लभाम्॥[7]

अर्थात् तब उस बालिका को वृषभानु द्वारा घर की ओर लेकर आने के समय मार्ग में देवताओं की पुष्प वृष्टि से तथा स्तुति वचनों से बढ़ाए हुये यश वाले एवं नगर वासियों द्वारा आदर को प्राप्त श्री वृषभानु योगियों द्वारा भी दुर्लभ प्रसन्नता को प्राप्त हुये ।

चतुर्थ सर्ग –

चतुर्थ सर्ग के पद्य संख्या 1-25 तक वरसानु नगर के निवासियों द्वारा कृत श्रीराधा के जन्मोत्सव का वर्णन है ।26-58 श्लोकों तक गर्ग मुनि द्वारा श्रीराधा के नाम संस्कार तथा वृषभानु द्वारा उत्सव में उपस्थित सभी नगरवासियों तथा अन्य देशों से आए हुये भक्तों की धन,आभूषणों आदि के द्वारा तृप्ति का वर्णन प्राप्त होता है ।जैसे –

अन्यान् नदीष्णान् मृदुगीतनृत्ये कुप्यैरकुप्यैर्वसुभिश्च वाचा ।
निवेदयामास कृतज्ञतां स्वां कृतज्ञता सत्पुरुषस्वभावः॥[8]

[6]श्रीराधाचरित महाकाव्य 3/31
[7]श्रीराधाचरित महाकाव्य 3/69
[8]श्रीराधाचरित महाकाव्य 4/57

अर्थात् उत्सव में उपस्थित सुंदर गीत तथा नृत्य में कुशल अन्य व्यक्तियों को स्वर्ण तथा चाँदी से भिन्न धातुओं एवं स्वर्ण और चांदी से युक्त धातुओं वाले धन से तथा वाणी से अपनी कृतज्ञता को निवेदित किया । क्योंकि कृतज्ञता का दिखाना सत्पुरुषों का स्वभाव ही होता है ।

तत्पश्चात् इसी सर्ग के ही 59-78 पद्यों तक जनों में श्रीराधा के जन्म की चर्चा , वर्षा ऋतु तथा शरद ऋतु का वर्णन प्रस्तुत किया है । जैसे –

इत्थं मनोहरमरीचिदुकूलवासा ,
वानीरवारकटिलम्बितकेशपाशा ।
आलम्बिवल्लरिकपोलगकर्णपूरा ,
राध्या शरद् यजति लोकहिताय राधाम्॥[9]

अर्थात् मनोहर किरणें ही जिसका वास हैं , बेंत समूह रूप कटि पर्यन्त फैले हुये केश वाली तथा लता रूप कपोलगत कर्णाभूषण वाली पूज्या शरद् ऋतु जन कल्याण के लिए श्रीराधा का पूजन करती है ।

पञ्चम सर्ग –

पंचम सर्ग के प्रारम्भिक 1-19 पद्यों तक देवों द्वारा श्रीराधा के नाम का समर्थन किया गया गया है तथा पद्य संख्या 20-49 तक माता कीर्ति के द्वारा शिशुलीला के संपादनार्थ श्रीराधा की प्रार्थना तथा वृषभानु के प्रातः संध्या समाप्ति के पश्चात् स्वगृह निवर्तन एवं श्रीराधा के प्रति वात्सल्य प्रकाशन के बाद अपने घर से बाहर की ओर गमन का वर्णन किया गया है । जैसे माता कीर्ति द्वारा बाल्यावस्था में होने वाली लीलाओं के दर्शनार्थ श्रीराधा के प्रति अपने वात्सल्य पूर्ण वचन कहने का उदाहरण निम्न लिखित है –

अभिनव बहुस्वनकान्तवासो मृदु परिधाय रजोऽवकीर्णकम्रे ।
सुखमवनितले मुहुर्लुण्ठन्तीं सपदि कदाङ्कमहं विरोपयेयम् ॥[10]

अर्थात् नवीन , बहुमूल्य , सुंदर तथा कोमल वस्त्र पहन कर धूलि से धूसर सुंदर पृथ्वीतल पर बार बार लोटती हुई तुम को मैं कब अपनी गोद में उठाऊँगी ?

इस प्रकार 50-71 पद्यों तक शिशिर ऋतु का वर्णन किया गया है तथा क्रमशः 72-75 पद्यों में कीर्ति का **श्रीवृषभानु को "भोजन का समय हो गया है"**कथन तथा भोजन की समाप्ति के बाद वे मध्याह्न को शयनार्थ जाते हैं । कीर्ति तथाश्रीवृषभानु के प्रति सद्वचन एवं महाकवि के परिचय से सर्ग के अंत का वर्णन प्रस्तुत है । अब जैसे शिशिर ऋतु की शोभा के वर्णन में यह पद्य प्रस्तुत है ।

शबलदलसिचा विभासमाना श्रुतिसुख मर्मरमेखलानिनादा ।
तुबरसुशिमिकुण्डला ऋतुश्रीः जयति हठात् सुरराजराजलक्ष्मीम् ॥ [11]

अर्थात् चितकबरे पत्र रूप वस्त्रों से सुशोभित , कर्णप्रिय मर्मर शब्द ही जिसकी मेखलाओं की ध्वनि हैं , ऐसी लौकी की फली ही जिसके कुंडलरूप हैं ऐसी शिशिर लक्ष्मी देवराज की शोभा को हठ से जीतती है ।

[9]श्रीराधाचरित महाकाव्य 4/78
[10]श्रीराधाचरित महाकाव्य 5/34
[11]श्रीराधाचरित महाकाव्य 5/71

षष्ठ सर्ग –

षष्ठ सर्ग के आदि 1-24 श्लोकों तक श्रीराधा की शैशवावस्था के व्यतीत होने पर उपवन में श्रीकृष्ण का अवलोकन, उन दोनों की परस्पर क्रीडा , सखियों द्वारा माता कीर्ति को वृतांत से अवगत कराना एवं कीर्ति को परमानन्द प्राप्त होने का वर्णन है । 25-43 पद्यों तक वसंत ऋतु का वर्णन है। जैसे इसी का एक उदाहरण अधोलिखित है –

तरुराजिरालि अधुना सुमनोहारैर्मानोहरावयवा ।
किसलयवासः दधति मुञ्चति पीतपर्णवासश्च ॥ [12]

अर्थात्अब किसलय रूप वस्त्रों को धारण करती हुई , पीतपत्र रूप जीर्णवस्त्रों का परित्याग करती हुई पुष्पों के हारों से मनोहर अवयव वाली वृक्षों की पंक्ति सुशोभित हो रही है।

तत्पश्चात् श्लोक संख्या 44-78 तक वरसानु नगर में गोप-गोपियों द्वारा संपादित रोचक होलिकोत्सव के वर्णन के साथ ही अंतिम 79वें पद्य में महाकवि नें अपने माता-पिता के नाम वर्णन के उपरांत सर्ग की समाप्ति की है। अब जैसे होलिकोत्सव के वर्णन का एक उदाहरण निम्न प्रकार से है –

स्मेराननननयनास्ते फलके यष्टिप्रहारमपि तासाम् ।
सहमानाः पुनरूचुः स्वीकुरुतार्याः परं प्रणयम् ॥ [13]

अर्थात् प्रसन्न मुख तथा नयनों वाले गोप ढाल पर दंड के प्रहार को सहते हुये भी 'हे गोपियो ! हमारे इस चुंबन रूप प्रेम को स्वीकार करो' इस प्रकार पुनः बोले ।

सप्तम सर्ग –

सप्तम सर्ग के प्रारम्भिक 1-17 पद्यों तक क्रमशः नंदग्राम का वर्णन , नन्द तथा यशोदा को नदी के तट पर एक अद्भुत बालक के दर्शनोपरान्त पुत्र प्राप्ति एवं भक्ति का महात्म्य वर्णित है । 18-40 पद्यों तक देवों , मानवों आदि द्वारा पुत्रोत्सव का आयोजन , गर्ग ऋषि द्वारा नामकरण , विप्रों को सुवर्ण तथा वस्त्रों से अलंकृत करना तथा पशु-पक्षियों द्वारा श्रीराधाकृष्ण के नामोच्चारण का वर्णन किया है । अब जैसे बालक के शुभजातकर्म संस्कार का एक उदाहरण अधोलिखित है –

मुनिमण्डलेन महिते मणेर्गृहे स्फटिकोपलै रचितकुट्टिमावनौ ।
उपविश्य हीरकवरासनं मुनिःकलिकाल 'कृष्ण' इति नाम सञ्जगौ ॥[14]

अर्थात् स्फटिक मणियों से निबद्ध भूमि वाले ,मुनियों से सुशोभित , मणि युक्त सदन में हीरों से निर्मित श्रेष्ठासन पर बैठ कर मुनि गर्ग नें पाप को मारने वाला 'कृष्ण' यह उस बालक कानाम रख दिया।

तत्पश्चात्श्लोक संख्या 41-75 तक चंद्रोदय तथा अस्त होने का वर्णन है । 76 तथा 77वें पद्यों में क्रमशः यशोदा द्वारा श्रीकृष्ण हा मुख वात्सल्य से चूमना एवं कवि ने स्व परिचयात्मक पद्य से सर्ग की समाप्ति की है ।

अष्टम सर्ग –

इस सर्ग के 1-46 पद्यों तक क्रमशः श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं , श्रीकृष्ण का वन की ओर गमन वन की वधूटियों का स्नान , एवं हैम पीठ पर आसीन श्रीराधा के साथ सखियों के परस्पर पति-कामना से संबन्धित वार्तालाप का वर्णन प्रस्तुत किया है । जैसे एक उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत है –

युष्मदीरितवचो भवेन्मतं वल्लभः स हृदयङ्गमो यदि ।
अन्यथा जनकसद्म सम्मतं कल्प एष मुनिसम्मतोऽपरः ॥ [15]

[12]श्रीराधाचरित महाकाव्य 6/40
[13]श्रीराधाचरित महाकाव्य 6/69
[14]श्रीराधाचरित महाकाव्य 7/21

अर्थात् हे सखियो ! आप के द्वारा प्रतिपादित वचन सत्य है किन्तु यदि पति प्रिय हो तो ,अन्यथा कन्या के लिए पिता का घर ही निवासार्थ समुचित ही है । इनमे से दूसरा मत तो मुनियों ने भी स्वीकार किया है ।

महाकवि ने 47-68 श्लोकों तक महर्षि नारद के वहाँ वन में आगमन का वर्णन , श्रीकृष्ण द्वारा श्रीराधा का गुणगान करते हुये आगमन तथा देवर्षि नारद द्वारा श्रीराधा का गुणगान करते हुये आकाश मार्ग से गमन का वर्णन है । 69-74 पद्यों तक श्रीराधा-कृष्ण की स्तुति के वर्णन केसाथ अष्टम सर्ग को दिव्य सर्ग स्वीकारते हुये 75वें पद्य में सर्ग का अंत किया है ।

नवम सर्ग –

नवम सर्ग के प्रारम्भिक 1-18 पद्यों तक श्रीराधा-कृष्ण द्वारा कृत दोलोत्सव का वर्णन है तथा पद्य संख्या 19-77 तक श्रीकृष्ण की गोपियों और श्रीराधा के साथ विविध रास लीला के वर्णन में श्रीकृष्ण का गोपियों के मध्य से अंतर्हित हो जाना , कभी अनेक रूपों में प्रत्येक गोपी के साथ रास खेलना , देवों द्वारा आकाश मार्ग से रास लीला का अवलोकन तथा भगवान शंकर का भी व्रजांगनात्व स्वीकार करना वर्णित है । अंत के 71-76 पद्यों में क्रमशः यमुना तट , अरण्य भाग , वृन्दावन का जयगान एवं सर्ग की समाप्ति की है । जैसे रास लीला का एक उदाहरण अधोलिखित है-

मयैवसाकं नटराजराजो नान्यापि काचित् सुभगा यथाहम् ।
इथं मनोभावपरंपरायामेकाकिनीं स्वां सकलापिमेने॥ [16]

अर्थात् रास लीला में "श्रीकृष्ण मेरे साथ नृत्य कर रहे हैं , जिस प्रकार मैं सौभाग्यशालिनी हूँ वैसी कोई भी गोपी नहीं है "। इस प्रकार का मनोभाव सभी गोपियों का होने पर , तब सभी ने अपने आप को श्रीकृष्ण से रहित केवल अकेले ही पाया । अर्थात् उनके द्वारा ऐसा सोचने पर श्रीकृष्ण अन्तर्भूत हो गए ।

दशम सर्ग –

इस सर्ग के आदि पद्यों की संख्या 1-23 तक ग्रीष्मर्तु का वर्णन सुंदरतया प्रस्तुत किया गया है जिसमें जामुन के फलों को व्रजबालाओं द्वारा चुनना तथा जलाशयों का सूखना वर्णित है । 24-49 पद्यों तक वर्षा ऋतु के वर्णन में सूअरों का जल में घों-घों शब्द करना एवं मंडूक आदि का वर्णन है । वर्षर्तु का एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है –

गाहनते प्रियसलिलाः शरीरपीनाः पानीयं ललिततरङ्गमीनवाप्याः ।
भेकानां 'टर' 'टर' शब्दशूलजालैः शार्दूला अपि सहसाऽपयान्ति कूलात् ॥ [17]

अर्थात् महिष मनोहर तरंगों से युक्त तथा मत्स्यपूर्ण जलवाली बांवड़ी के जल में डुबकी लगाते हैं तथा मेंढकों के 'टर' 'टर' तीव्र शब्द के समूह से व्याघ्र भी सहसा तट से पलायन करते हैं ।

तत्पश्चात् 50-76 पद्यों तक श्रीकृष्ण का संकेत स्थल की ओर गमन तथा वहाँ शबरियों के साथ प्रेमालाप के पश्चात् उस स्थान से गमनार्थ उद्यत अपने प्रेमी श्रीकृष्ण के प्रति शबरियों का स्त्री स्वभावोचित न गमानार्थ वचनों से रोकना एवं 77वें श्लोक मे पूर्ववत् सर्ग का अंत किया गया है ।

एकादश सर्ग –

इस सर्ग के 1-26 पद्यों तक शबरियों द्वारा कृत प्रेमोपालंभ तथा श्रीकृष्ण द्वारा उसका समाधान करके श्रीराधा के वन में प्रवेश का वर्णन है । तत्पश्चात् 27-55 पद्यों तक श्रीराधा की सखियों का स्नान वरना , सखियों

[15]श्रीराधाचरित महाकाव्य 8/35
[16]श्रीराधाचरित महाकाव्य 9/34
[17]श्रीराधाचरित महाकाव्य 10/40

द्वारा श्रीकृष्ण को देखने पर परस्पर संदेह युक्त वार्तालाप करना ,तथा शीकृष्ण के प्रेम का रहस्योद्घाटन करना प्रस्तुत है । यथा- शबरियों द्वारा कृत प्रेमोपालम्भ का श्रीकृष्ण द्वारा समाधान करने का एक उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत है –

स्वान्तं कठोरमिति चोलिकया निबद्धं,
पीयूषपूर्णमधरं रसिकाः पिबन्ति ।
आशीविषैः कुटिलकुन्तलकान्तपाशैर्,
वध्यन्त एव पुरुषाःविवशा वशाभिः ॥ [18]

अर्थात् चोलिका से निबद्ध नारियों का हृदय कठोर होता है, अतः अमृत पूर्ण अधरों का रसपान रसिकजन करते हैं । इस प्रकार वक्र-केशपाश रूप विषैले सर्पों द्वारा स्त्रियाँ पुरुषों को विवश कर अपने वश में कर लेतीं हैं ।

पद्य संख्या 55-74 तक सखियों द्वारा गर्ग ऋषि के कहे हुये वचन के कथन से श्रीराधा को श्रीकृष्ण के प्रति प्रेरित करना , श्रीकृष्ण के आगमन का वर्णन एवं उन के परस्पर मिलन के वर्णन के साथ ही 75वें पद्य में सर्ग की पूर्ववत् समाप्ति की गयी है ।

द्वादश सर्ग –

द्वादश सर्ग के प्रारम्भिक 1-39 पद्यों पर्यन्त श्रीराधाकृष्ण का परस्पर प्रेमालाप तथा तत्पश्चात् श्रीराधा द्वारा श्रीकृष्ण को उसके दासी होने पर क्या-क्या दुख सहने पड़ेंगे , इसका कथन प्रस्तुत किया गया है । जैसे-

गौरीदिनं शोभनमद्य बाले ,
सौभाग्यसिद्धौ नितरां प्रशस्यम् ।
कलिन्दकन्याविमलाम्भसित्वं,
स्नात्वा व्रतं चाचर देवकन्ये ॥[19]

अर्थात् सौभाग्य की सिद्धि के लिए प्रशंसनीय आज शुभ गौरी दिन है । अतः "हे बाल कन्ये ! यमुना के निर्मल जल में स्नान कर गौरी व्रत को धारण करो", इस प्रकार हे कृष्ण! ऐसा गाँव की वृद्ध महलायँ कहेंगी ।

इसके बाद 40-73 श्लोकों तक श्रीराधा के कथनों का श्रीकृष्ण द्वारा प्रत्युत्तर देना , वहाँ से उन दोनों का अंतर्हित होना । उत्कल भूमि के वर्णन के साथ वहाँ श्रीकृष्ण का प्रवेश , उत्कल वासियों द्वारा उत्कल देश में ही निवास करने के लिए श्रीकृष्ण को प्रार्थना करना , विश्वकर्मा द्वारा अद्भुत देवालय के निर्माण के बाद जगन्नाथ का वहाँ विराजना तथा अपनी काष्ठमयी मूर्ति मंदिर में रखवाने का आदेश देकर वहाँ से अन्तर्ध्यान होने का वर्णन है । 74-84 पद्यों तक समुद्र के वर्णन के साथ ही 85वें पद्य से सर्ग का अंत किया है ।

त्रयोदश सर्ग –

यह सर्ग इस महाकाव्य का अंतिम सर्ग है । इसमें क्रमशः 1-15 पद्यों तक मथुरा का वर्णन , 15-46 पद्यों तक यमुना तट पर स्थित उद्यान का वर्णन है । 47-96 पद्यों तक भागवत कथा का प्रसंग है , जिसमें कि – जिस कथा को श्रवणार्थ भिन्न भिन्न देशों से भक्त जन भक्त जन आते हैं । एक अद्भुत तेज वाली बालिका

[18]श्रीराधाचरित महाकाव्य 11/8
[19]श्रीराधाचरित महाकाव्य 12/25

इस कथा कि वाचिका है , वर्णित है और इसके साथ ही 97वें पद्य में सर्ग का अंत कवि द्वारा अपने परिचय से किया है । यथा मथुरा वर्णन एवं भागवत कथा के प्रसंग में क्रमशः एक-एक पद्य निम्नलिखित है -

किं वा वदामि मथुरामहिमानमत्र, यस्याः पुरः परिसरे प्रतिहार भूमौ ।
हृद्या सखी तरणिजाः मधुसूदनस्य, दौवारिकीव सततं श्रयते पुरन्ध्रीः ॥ [20]

अर्थात् मथुरा का महात्म्य नहीं वर्णित किया जा सकता है । क्योंकि जिस पुरी के परिसर में तथा प्रतिहार भूमि पर श्रीकृष्ण की सखी यमुना दौवारिकी के समान व्रजांगनाओं की सेवा कर रही है ।

राजद्विशालपटमण्डलमण्डपान्तर्,
दूरादागताः प्रवयसो युवजानयश्च ।
बालाश्च नव्यपरिधानविराजमानाः,
पारेसहस्रमनुभूषितवन्त आसन् ॥ [21]

अर्थात् रमणीय विशाल वस्त्रमंडप में दूर से आए हुए वृद्ध,युवक तथा बालाएँ नूतन वस्त्रों से शोभायमान होते हुए श्रीकृष्ण की कथा को श्रवणार्थ हजारों की संख्या में वहाँ उपस्थित हुए ।

उपसंहार -

अन्त में हम कह सकते हैं कि 20वीं शताब्दी के इस महाकाव्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कवि ने श्रीराधा-कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को प्रकट किया है । जो भक्ति, महाकाव्य के प्रथम श्लोक के मंगलाचरण से लेकरमहाकाव्य के अंतिम पद्यों में श्रीमद्भागवात कथा वर्णन तक अवलोकित हुई है ।

------इति-----

[20]श्रीराधाचरित महाकाव्य 13/13
[21]श्रीराधाचरित महाकाव्य 13/82